Dr. Seema Kumari, Asst. Prof. (Pol. Sc.), RMC VKSU

BA-I, Comparative Politics.

Date - 24.01.2022

संविधानवाद की विभिन्न अवधारणाएं

संविधान के उद्देश्य एवं आदर्श हर राज्य में एक जैसे नहीं होते तथा वैचारिक दृष्टि से अलग-अलग होते हैं -

1. पाश्चात्य अवधारणा
2. साम्यवादी अवधारणा
3. विकासशील देशों की अवधारणा

1. पाश्चात्य अवधारणा में सीमित सरकार की परंपरा एवं राजनीतिक उत्तरदायित्व का सिद्धांत है। इसके अंतर्गत विधि का शासन, मौलिक अधिकार एवं स्वतंत्रताएं, शक्ति विभाजन, शक्तियों का पृथक्करण, शक्तियों का विकेंद्रीकरण, स्वतंत्र एवं निष्पक्ष न्यायपालिका। राजनीतिक उत्तरदायित्व के अंतर्गत यह समझा जाता है कि शासन सत्ता का प्रत्येक अंग तथा अधिकारी स्वयं को जनमत के प्रति उत्तरदायी समझे। उ० दायित्व का यह सिद्धांत निम्न के तत्वों आधार पर समझा जा सकता है - निश्चित अवधि में नियमित चुनाव, दलीय व्यवस्था का प्रावधान, प्रेस की स्वतंत्रता, जनमत, परम्पराएं एवं बहुलवाद + परंपराएं समाज में दीर्घकाल से स्थापित रहती है कोई भी सरकार इन्हें बरकरार रखना चाहती है।

2. संविधानवाद की साम्यवादी अवधारणा - पूर्व में सोवियत संघ तथा पूर्वी यूरोप में यह प्रचलित था। वैचारिक दृष्टि से अब साम्यवादी, चीन, उ० कोरिया, वियतनाम तथा क्यूबा ही साम्यवादी देश रह गए हैं पश्चिमी अवधारणा से समानता रखते हुए निम्न

Scanned with CamScanner

मान्यताएँ पृथक हैं:- 1. सामाजिक जीवन में शक्ति के आर्थिक पहलू की सर्वोच्चता महत्वपूर्ण है। 2. आर्थिक शक्ति से संपन्न वर्ग का प्रभुत्व 3. रा० शक्ति का आर्थिक शक्ति के अधीन होना।

3. विकासशील देशों की अवधारणा - यहां संविधानवाद अभी तक अस्थायित्व के दौर से गुजर रहा है। रा० प्रक्रियाएं संक्रमण के दौर से गुजर रही हैं हालांकि स्थायित्व भी देखने को मिलता है। इन देशों की अपनी विशिष्ट समस्याएं हैं जो इतनी विविध एवं बहुआयामी हैं कि उन्हें सूचीबद्ध करना सरल नहीं है। संवैधानिक मानक की समस्या परिपक्वता का अभाव है। स्थायित्व की समस्या, आर्थिक विकास नहीं हो पा रहा है। राजनीतिक सत्ता में वैधता की समस्या जिसका ताजा उदाहरण अफगानिस्तान पर तालिबान का सत्तासीन होना। सामाजिक सांस्कृतिक समन्वय की समस्या, आधुनिकीकरण की चुनौतियां - बांग्लादेश, अंतर्राष्ट्रीय प्रतिष्ठा का प्रश्न, एवं संप्रभुता का प्रश्न चुनौतीपूर्ण है।

विकासशील देशों का संविधानवाद में निम्न लक्षण हैं:- संविधानवाद निर्माण की अवस्था में है, मिश्रित प्रकृति रखता है। सं० प्रवाह की दौर में है, संविधानवाद दिशाहीन चरण में है।

संविधानवाद की विभिन्न अवधारणाओं के संदर्भ में संविधानवाद की पीटर मर्कल का मानना है कि संविधानवाद का चिरस्थायी मूल्य चाहे वह पाश्चात्य हो या साम्यवाद, विकसित देशों का हो या विकासशील देशों का पूर्णतया स्थापित होना या स्थापना के प्रयास तक सीमित हो, उसकी प्राप्ति की प्रक्रियाओं तथा संस्थात्मक व्यवस्थाओं से कहीं दूर पाया जाता है। →